भक्त कवि : नामदेव

डॉ कुलदीप कौर
सह-प्राध्यापक
हिंदी विभाग
गोखले मेमोरियल गर्ल्स कॉलेज
कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश

नामदेव उत्तर भारत के सांस्कृतिक एवं धार्मिक जागरण के प्रणेता थे। नामदेव के समय में महाराष्ट्र में नाथ एवं महानुभाव संप्रदाय प्रचलित थे। नाथ संप्रदाय योग साधना का समर्थक तथा बाह्याडंबर का विरोधी था। भारतवर्ष में अनेक पंथ प्रचिलत रहे हैं – शंकराचार्य का वैष्णव पंथ, सिद्ध सरहपाद का सहजयान आदि। भक्ति के कई मत प्रचलित रहे – आलवार भक्त, शैव-मत, वारकरी पंथ, महानुभाव पंथ, लिंगायत, सहजिया पंथ के बाउल, मुस्लिम सूफी संत। राम और कृष्ण के उपासक वैष्णव आचार्यों में यामुनाचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, निंबार्काचार्य और बल्लभाचार्य। महाराष्ट्र में वारकरी पंथ पर रामानुजाचार्य के 'प्रपत्ति' या ईश्वर के प्रति संपूर्ण समर्पण का भाव

दिखाई देता है। वारी यानी तीर्थ-यात्रा करने वाले लोग। वारकरी पंथ में शैव और वैष्णव मत का समन्वय है। वारकरियों में एक और निवृत्ति और ज्ञानेश्वर जैसे योगी हैं, तो नामदेव और गोरा जैसे भक्त भी हैं। नामदेव को मराठी का पहला कवि माना जाता है। नामदेव के काव्य में ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय है।

नामदेव के कुल के मूल पुरूष यदुशेट के नाम से विख्यात थे। वह जाति से शिंपी (दर्जी) थे। यदुशेट शांत स्वभाव के थे। पति-पत्नी दोनों विट्ठल का भजन गाया करते थे। इनकी छठीं पीढ़ी में नामदेव हुए। विट्ठल नामदेव के उपास्य थे। नामदेव का जन्म अनुमानतः 1270 ई० में कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन महाराष्ट्र के परभणी जिले के नरसी बामणी गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम दामा शेट तथा माता का नाम गोणाबाई था। विद्याध्यन में इनका मन नहीं लगा। आठ वर्ष की उम्र में इनका विवाह कर दिया गया। इनका विवाह गोविन्दशेट सदावर्ते की बेटी राजाबाई से हुआ। नामदेव के चार पुत्र हुए - नारायण, महादेव, गोविंद और विट्ठल। इनकी एक पुत्री भी थी, जिसका नाम किंबाबाई था।

नामदेव शिंपी यानी छीपी जाति के थे। इनके पिता कपड़े छापने (छीपा) तथा कपड़े सीने (दर्जी) का काम करते थे। पिता ने इन्हें व्यवसाय करने के लिए कहा; परंतु इनका मन भक्ति-भाव एवं विट्ठल

स्मरण में तल्लीन रहता। परिवार को आर्थिक अभाव में जीना पड़ा। परिवार को भरपेट भोजन प्राप्त करना भी दुष्कर था। माता-पिता, पत्नी सभी इनका ध्यान परिवार के दारिद्र्य की ओर दिलाते, परंतु भक्ति में डूबा मन सांसारिकता में कैसे रम सकता था। नामदेव कहते है–

"रांगनि रांगउ सीर्वान सीवउ॥

राम नाम बिनु धरीअ न जीवउ॥

भगति करउ हरि के गुन गावउ॥

आठ पहर अपना खसम धिआवउ॥" [1]

नामदेव के माता-पिता सरल और धार्मिक प्रवृत्ति के थे। वह विट्ठल की स्तुति करते थे। नामदेव पर मात-पिता की इस धार्मिक वृत्ति का प्रभाव पड़ा। इनका समय भजन-कीर्तन में बीतता। गाँव के मंदिर में भजन-कीर्तन होता था। नामदेव ने पिता से आग्रह किया कि उन्हें भी साथ लेकर जाएँ। नामदेव प्रातःकाल के समय अपने पिता के साथ मंदिर में पूजा-अर्चना करने जाते और रात्रि के समय मंदिर में भजन सुनने जाया करते। पंढरपुर गाँव के लोग पिता-पुत्र को भगवान के प्रति इतना श्रद्धावान तथा आस्तिक देखकर आश्चर्यचकित होते और प्रसन्न भी होते। बहुत कम उम्र में ही नामदेव के हृदय में भगवान के प्रति श्रद्धा, आस्था और विश्वास का भाव दृढ़ होने लगा। भक्ति में डूबा

मन धीरे-धीरे सांसारिक विषयों से विरक्त होने लगा। भगवान के नाम-स्मरण और भजन-कीर्तन में उन्हें बड़ा आनन्द आता था। वे प्रभु की याद में जहाँ कहीं भी बैठ जाते, वहीं उनकी भगवान से प्रेम की लौ लग जाती थी। आँखों से प्रभु-प्रेम के आँसू झरने लगते। युवावस्था में कदम रखते ही उनकी यह लगन दृढ़ होती गई।

नामदेव के पिता चाहते थे कि उनका पुत्र व्यापार में मन लगाए, घर संभाले। वे नामदेव को कपड़ा देकर बाजार भेजते ताकि कुछ धन कमा कर लाए; परंतु वे जब बाजार पहुँचते तो किसी वृक्ष या एकांत देखकर बैठ जाते। भगवान की स्तुति करने लगते या किसी साधु, फकीर का भजन सुनने लगते। भजन सुनने में इतना मगन हो जाते कि उन्हें यह ध्यान ही नहीं रहता कि वह किस काम से आए हैं। पिता ने उन्हें व्यापार से जोड़ने का बहुत प्रयत्न किया, पर असफल रहे। उन्होंने भी अपने पुत्र की धार्मिक वृत्ति के सामने अब और आग्रह करना छोड़ दिया। उन्होंने यह मान लिया कि जब कोई भक्त भगवान के ध्यान में लीन हो जाता है तो उसे बाहरी दुनिया की कोई खबर नहीं होती।

नामदेव पहले विट्ठल के उपासक थे, बाद में निर्गुण भक्ति मार्ग की ओर अग्रसर हुए। प्रो० साहिब सिंह का मत है कि **"नामदेव का 'बीठुल' सर्वाव्यापी 'राम' है जो ध्रुव एवं नारद आदि भक्तों को**

ऊँची पदवी देने वाला है"। [2] निर्गुण भक्ति की ओर जाने की प्रेरणा उन्हें ज्ञानेश्वर से मिली। नामदेव के समकालीन भक्त थे- भगत त्रिलोचन, विसोबा खेचर, ज्ञानेश्वर, निवृत्तिनाथ, सोपानदेव एवं मुक्ताबाई। इन संतों ने महाराष्ट्र में भक्ति की लहर चलाई। संत ज्ञानदेव के आग्रह पर इन्होंने विसोबा खेचर से दीक्षा ली। विसोबा खेचर से हुई पहली भेंट के विषय में प्रसिद्ध है कि जब नामदेव उनके पास पहुँचे, तब वह शिवलिंग पर पैर रखकर सो रहे थे। कुछ विद्वान यह मानते हैं कि नामदेव मूर्ति-पूजक नहीं थे। यह देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ। उन्होंने विसोबा खेचर को शिवलिंग से पैर हटाने के लिए कहा। उन्होंने उत्तर दिया – "जहाँ भगवान नहीं हो, उस जगह पर मेरे पैर रख दो।" विसोबा खेचर के मुँह से यह सुनकर नामदेव को सत्य का साक्षात्कार हुआ कि ऐसा कौन सा स्थान है, जहाँ ईश्वर नहीं हैं। विसोबा खेचर ने नामदेव को कर्मकाण्डों की व्यर्थता एवं सर्वव्यापी परमात्मा के बारे में ज्ञान दिया। उन्होंने नामदेव से कहा – बहुत कामना से तीर्थों पर जाने पर भी अविद्या का साथ नहीं छूटता। ध्यान, धारणा, मुद्रा, जप आदि से व्यर्थ ही शरीर को कष्ट होता है। एक परमात्मा का ध्यान करो। पर स्त्री एवं पर-द्रव्य पर चित्त न लगाओ और गुरु की सेवा करो। वह तुम्हें आत्म-ज्ञान देगा, जिससे भ्रांति नष्ट होगी। नामदेव ने इस तथ्य को जाना कि उनका मन गुरु पर ही भरोसा करता है-

गुरु चेले ही मनु मनिआ॥

जन नामै ततु पछानिआ॥[3]

नामदेव ईश्वर की सर्वव्यापका को स्वीकार करते हैं। जगत में सब कुछ गोविन्द ही गोविन्द है, गोविन्द के बिना कुछ नहीं। माया का रूप विचित्र है, इसे कोई विरला मनुष्य ही समझता है। एक सूत्र में जैसे सैकड़ों एवं हजारों मणियाँ पिरोई होती हैं, वैसे ही प्रभु ने संसार को ताने-बाने की तरह पिरोया हुआ है-

एक अनेक बिआपक पूरक जत देखत तत सोई॥

माइआ चित्र बचित्र बिमोहित बिरला बूझै कोई॥

सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है गोबिंद बिनु नहीं कोई॥

सूतु एक मणि सत सहंस जैसे ओति पोति प्रभु सोई॥[4]

गुरु की कृपा से ईश्वर के साथ एकात्मकता को नामदेव ने स्वीकार किया है। झिलमिल प्रकाश एवं अनहद सबद की स्वीकारोक्ति उनके पद में मिलती है-

जब देखा तब गावा॥

तउ जन धीरजु पावा॥ 1 ॥

नादि समाइलो रे सतिगुरू भेटिले देवा ॥ 1 ॥ रहाउ॥

जह झिलिमिल कारू दिसंता॥

जह अनहद सबद बजंता ॥

जोती जोति समानी

मैं गुर परसादी जानी ॥ 2 ॥[5]

ज्ञानदेव का प्रभाव नामदेव के जीवन पर दिखाई देता है। ज्ञानदेव एवं उनकी संत मंडली के साथ नामदेव भी तीर्थयात्रा पर गए। वे देवगिरि, पंचवटी होते हुए जूनागढ़ पहुँचे, जहाँ उनका मेल नरसी महता से हुआ। यहाँ से वे हस्तिनापुर, कुरूक्षेत्र, हरिद्वार, काशी, प्रयाग, गया, अयोध्या, मथुरा, गोकुल वृंदावन, जगन्नाथपुरी होते हुए द्वारिका पहुँचे। औढ़ा नागनाथ होते हुए पंढरपुर लौट आए। बाद में वे पंजाब के गुरदासपुर जिले में आए। वहाँ की शांत एवं सुरम्य प्रकृति को देख वहीं रूक गए। उस गाँव को घुमान कहा जाता है। पंजाब में नामदेव के अनेक शिष्य हुए। नामदेव की मृत्यु की तिथि के बारे में विभिन्न मत हैं। परिसा भागवत आषाढ़ शुदी एकादशी देता है। घुमान में उसे माघ द्वितीया मानते हैं। उस दिन वहाँ मेला लगता है। ऐसा माना जाता है कि 80 वर्ष की आयु में नामदेव अपनी माँ से मिलने फिर पंढरपुर आए। वहीं उन्होंने देह त्याग दिया। पंढरपुर के बिट्ठल मंदिर के प्रवेश-द्वार पर 'नामदेवांची पायरी' (नामदेव की पैड़ी या सीढ़ी) नाम से स्थान उनकी समाधि का स्थान माना जाता है।

'गुरु ग्रंथ साहिब' में नामदेव के 61 पद लिखते हैं। ' गुरु ग्रंथ साहिब' में आए नामदेव के पदों के आधार पर डॉ० शिवप्रसाद सिंह ने

नामदेव की भाषा के संबंध में कहा है –"नामदेव की भाषा में पिंगल, अपभ्रंश के कुछ परवर्ती रूप, पुरानी राजस्थानी तथा कई प्रकार की जनपदीय बोलियों का मिश्रण पाया जाता है। किन्तु भावपूर्ण, सहज भक्ति की रचनाएँ ब्रजभाषा में ही दिखाई पड़ती हैं।"

'गुरु ग्रंथ साहिब' में संगृहीत भक्तों की वाणी में कबीर एवं फरीद के बाद सर्वाधिक इन्हीं की वाणी है। उनमें अनेक दृष्टांत दिए गए हैं जैसे पानी और बुदबुदा, कपड़ा नापने का गज, कपड़ा काटने की कैंची, साँप और उसकी केंचुली छोड़ने की वृत्ति, पानी में रहने वाली मछली आदि। नामदेव ने मन को गज और जिह्वा को कैंची बताकर यमराज के पाश से मुक्त होने की क्रिया शुरु की –

मनु मेरो गजु जिहवा मेरी काती॥ मपि मपि काटउ जम की फासी॥ 1 ॥कहा करउ जाती कह करउ पाती॥ राम को नामु जपउ दिनु राती॥ रहाउ॥

सुइने की सुई रुपे का धागा नामे का चितु हरि सिउ लागा॥ [6]

नामदेव के समय में समाज में वर्ण-व्यवस्था का पालन होता था। ब्राह्मणों का शूद्रों के साथ बर्ताव अच्छा नहीं था। अद्विज जातियों में भक्ति-भावना बढ़ने लगी। वेदों और स्मृतियों की भक्तिधारा के समानान्तर उन्होंने अपनी भक्ति-धारा का विकास किया। तथाकथित नीची जाति के लोगों को अपनी भक्ति-धारा में शामिल करना शुरु कर

दिया। बिट्ठल भक्त वारकरी सन्त विभिन्न जातियों और पंथों से थे। कोई माली था, कोई कुम्हार तो कोई छीपा। स्वयं नामदेव छीपा सावंता-माली, बंका और चोखा-कुम्हार, नरहरि-सुनार, गोरा-कुम्हार, जनाबाई-अन्त्यज दासी थी। वारकरी पंथ ने भागवत धर्म की विष्णुभक्ति में, नाथपंथ की उदारता तथा सब जातियों के लिए मुक्ति के द्वार खुले कर दिए।

वारकरी पंथ में सर्वण-अवर्ण, गृहस्थ-विरक्त तथा ब्राह्मण से चांडाल तक को स्थान दिया गया था।

तत्कालीन समाज में वर्ण-व्यवस्था के नाम पर रूढ़ियों का पालन कठोरता से होता था। इसकी आँच नामदेव को भी लगी। कहा जाता है कि एक बार महाशिवरात्रि के अवसर पर संत मंडली के साथ नामदेव औढ़ा नागनाथ पहुँचे। उनके कीर्तन को सुनकर भीड़ इकट्ठी हो गई। ब्राह्मणों ने नामदेव को मंदिर के पीछे जाने के लिए कहा। मान्यता यह है कि नामदेव के ऐसा करने पर भगवान ने पंडो की ओर पीठ और नामदेव की ओर मुँह कर लिया। हीन जाति का होने के कारण नामदेव ने अपने जादमराया से गिला किया –

हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ॥ भगति करत नामा पकरि उठाइआ॥ 1॥

हीनड़ी जाति मेरी जादिम राइआ॥ छीपे के जनमि काहे कउ

आइआ ॥ रहाउ ॥[7]

नामदेव के जीवन से जुड़ी अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। मूर्ति को दूध पिलाने का प्रसंग, विट्ठल से छान छवाना, मंदिर के दरवाजे का नामदेव की ओर घूम जाना इत्यादि। एक बार नामदेव के पिता की अनुपस्थिति में नामदेव की माँ ने उनसे कहा कि वह नैवेद्य लेकर विट्ठल को चढ़ा कर आए। नामदेव कटोरे में दूध और लोटे में पानी लेकर ठाकुर को भोग लगाने के लिए विनती करने लगे कि आप दूध पीजिए। अगर आप दूध नहीं पिएंगे तो मैं भी खाना नहीं खाउँगा, पानी नहीं पीउँगा। वह आग्रह करने लगे कि हे मेरे गोविन्द दूध पीओ तो मेरा मन संतुष्ट हो जाए। भक्त के हठपूर्ण आग्रह के समक्ष विट्ठल को झुकना पड़ा-

दूधु कटोरे गडवै पानी॥ कपल गाइ नामै दुहि आनी॥ 1 ॥

दूधु पीउ गोबिंदे राइ॥ दूधु पीउ मेरा मनु पतीआइ॥

नाही त घर को बापु रिसाइ॥ 1 ॥ रहाउ ॥

सोइन कटोरी अंम्रित भरी॥ लै नामै हरि आगै धरी॥

एकु भगतु मेरे हिरदै बसै॥ नामे देखि नराइनु हसै॥

दूधु पीआइ भगतु धरि गइआ॥ नामे हरि का दरसनु भइआ॥[8]

नामदेव ने नाम-संकीर्तन पर बल दिया एवं भक्ति को सर्वसुलभ बनाया। उनके अनुसार नाम-संकीर्तन ही सर्वोत्तम धर्म है। नाम-स्मरण से भ्रम का नाश होता है। उन्हें केवल प्रभु के नाम का ही

सहारा है-

मैं अंधुले की टेक तेरा नाम खुंदकारा ॥

मैं गरीब मैं मसकीन तेरा नामु है अधारा॥[9]

नाम की महिमा सभी संतो ने स्वीकार की है। नाम की बराबरी तप, तीर्थ और दान भी नहीं कर सकते-

सभै घट रामु बोलै॥ राम बिना को बोलै रे॥ 9 ॥ [10]

ईश्वर का नाम ही मोक्ष देने वाला है। गुरु रास्ता दिखाता है, संसार-सागर से पार उतार देता है-

भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै॥

जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै॥ [11]

नाम-स्मरण से मनुष्य भव-सागर पार कर सकता है, अन्य साधनों से नहीं। वह अपने मन को संबोधित करत हैं कि तू अपने राम का भजन कर, उसकी प्रेम-भक्ति कर-

असुमेध जगने॥ तुला पुरख दाने॥ प्राग इसनाने॥ 1 ॥

तउ न पुजहि हरि कीरति नामा॥

अपुने रामहि भजु रे मन आलसीआ॥ रहाउ॥ [12]

एक भक्त अपने अराध्य से प्रार्थना करता है कि वह जैसा भी है, उसके अराध्य से उसे स्वीकार करें। भक्त की हमेशा ऐसी ही मनोकामना होती है। नामदेव अपने केशव से प्रार्थना करते है कि वह

जैसा भी है, उसे स्वीकार करें। नामदेव का यह आग्रह उनके एक मराठी पद में मिलता है-

गाण जरी म्हणों तरी गणेश सारजा ।

आणिक नाही दुजा तथावांचूनी॥ 1 ॥

नाचयू म्हणों तरी तांडवनी महेश्वरू।

तो एक नृत्य कारू करू जाणे ॥ 2॥

बोलका म्हणों तरी बोलके वेदचारी।

त्या पै काय उरी जें मी बोलों ॥ 3 ॥

जाणू म्हणों तरी अठराही जाणे।

त्या पै काय उणेंजे भी जाणो ॥ 4 ॥

कलावन्त म्हणो तरी चन्द्र सूर्य दोन्ही।

बारां सोलां गगनीं दावितातीं॥ 5 ॥

नामा म्हणें आवद्ये आवद्ये वेचलें।

केशवे आपुलें म्हणावें मातें॥ 6 ॥ [13]

नामदेव को प्रभु के नाम-जप पर अगाध विश्वास है। मैं तेरा सेवक, तेरा नाप जपने से इस भवसागर से पार क्यों नहीं होउँगा। इसलिए वे गनिका, कुबिजा, अजामिल, विदुर, सुदामा, उग्रसेन का स्मरण करते हैं कि आपने इन्हें जैसे पार उतारा है, मुझे भी इस संसार-सागर से पार लगाएँगे। जिन्होंने राम का नाम लिया है, नामदेव

उस पर बलिहारी जाते हैं-

देवा पाहन तारीअले॥ राम कहत जन कस न तरे॥ 1 ॥ रहाउ ॥

तारीले गनिका बिनु रूप कुबिजा बिआधि अजामलु तारीअले॥

चरन बधिक जन तेऊ मुकति भए॥

हउ बलि बलि जिन राम कहे॥ 1 ॥

दासी सुत जनु बिदरू सुदामा उग्रसैन कउ राज दीए॥

जप हीन तप हीन कुल हीन क्रम हीन नामे के सुआमी तेऊ तरे॥ [14]

संत कवियों ने सामाजिक एवं धार्मिक कर्मकाण्ड, मूर्ति-पूजा, तीर्थ, व्रत आदि का खंडन किया है। बाह्याचारों एवं मिथ्याडंबरों का विरोध किया है। मूर्तिपूजा की व्यर्थता पर कबीर का कथन है कि पत्थर को परमेश्वर मान कर संसार वंदना करता है; परंतु जो इस भरोसे में रहेगा कि मूर्ति-पूजा से मुक्ति मिल जाएगी, वह काल की धारा में डूब जाएगा-

कबीर पाहनु परमेसरू कीआ पूजै सभु संसारू॥

इस भरवासे जो रहे बूड़े काली धार॥ [15]

रविदास भी परमात्मा की सर्वव्यापकता को स्वीकार करते हुए मानते हैं कि ईश्वर मंदिर या मस्जिद में नहीं, सर्वत्र हैं-

देहुरा अरु मसीत मँहि 'रविदास' न सीस नाय।

जिह लौं सीस निवावना, तो ठाकुर सभ थांय॥ [16]

मूर्ति-पूजा के बारे में नामदेव के विचार है कि एक पत्थर को मूर्ति बनाकर श्रद्धा से पूजा जाता है तो दूसरा पत्थर पैर से लताड़ा जाता है। यदि एक पत्थर देवता है तो दूसरा भी देवता ही है। नामदेव का कथन है कि हम तो (मूर्ति पूजा को छोड़कर) परमात्मा की ही सेवा करते है -

सतिगुरू मिलै त सहसा जाई॥

किसु हउ पूजउ दूजा नदरि न आई॥

एकै पाथर कीजै भाउ॥ दूजै पाथर धरीऐ पाउ॥

जे ओहु देउ त ओहु भी देवा॥ कहि नाम देउ हम हरि की सेवा॥[17]

मूर्ति पूजा के संबंध में नामदेव का विचार है कि उनका विट्ठल हर जगह व्याप्त है। पूजा के बाहरी उपादानों को यदि मैं उन्हे अर्पित करता हूँ तो वह सभी पहले ही किसी-न-किसी के द्वारा गृहीत किया गया है, तो मैं उन्हें कैसे दूँ। मैं घड़ा लाकर उस जल से ठाकुर को स्नान कराऊँ तो उस जल में बयालीस लाख जीव रहते है। यदि फूल लाकर उन्हें माला में पिरोकर ठाकुर जी की पूजा करूँ तो उन फूलो से भँवरे ने सुगंधि ले ली है। दूध लाकर खीर बना कर भेंट करूँ तो बछड़े ने दूध को पीकर जूठा कर दिया है।

आनीले कुंभ भराईले उदक ठाकुर कउ इसनानु करउ॥

बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ॥ 1 ॥

आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ॥

पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला काई करउ॥ 2 ॥

आनीले दूधु रीघाईले खीरं ठाकुर कउ नैवेदु करउ॥

पहलि दूधू बिटारिओ बछरै बीठलु भैला काइ करउ ॥ 3 ॥ [18]

गुरु से ज्ञान प्राप्त करने के बाद नामदेव का जीवन ही बदल गया। भक्ति के कर्मकाण्ड, जप, तीर्थ, व्रत, उपवास और भजन कीर्तन उन्हें सारहीन प्रतीत होने लगे। बाह्यमुखी पूजा उन्हें व्यर्थ दिखाई देने लगी। वह परमात्मा की सर्वव्यापकता और उसके अनंत रूप को स्वीकार करते है। वह कहते हैं-

तीरथ देखि न जल महि पैसउ जीअ जंत न सतावउगो॥

अठसठ तीरथ गुरु दिखाए घट ही भीतर न्हाउगो ॥ [19]

नामदेव ने तीर्थों की निस्सारता पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। तीर्थ व्यक्ति के शरीर की मैल दूर करने के लिए, नदी या सरोवर में स्नान करने के लिए नहीं है। राम का नाम लेने पर पापी भी तर जाते हैं तो तीर्थों पर जाने का क्या अर्थ-

राम संगि नामदेव जन कउ प्रतिगआ आई॥

एकादसी ब्रतु रहै काहे कउ तीरथ जाई॥ 1 ॥ [20]

नामदेव की दृष्टि में ईश्वर किसी एक स्थान (मंदिर) तीर्थस्थल

और अवतारी पुरूष तक सीमित नहीं है। वह एक है, अनेक होकर सर्वत्र विराजता है-

एक अनेक बिआपक पूरक जत देखउ तत सोई॥

घट-घट अंतरि सरब निरंतरि केवल एक मुरारी॥ [21]

नामदेव ने ईश्वर को घट-घट व्यापी माना है। हिन्दू मंदिर में भगवान की पूजा करता है तुर्क मस्जिद में। वह जिसकी आराधना करते हैं, वह न तो मंदिर में रहते हैं न ही मस्जिद में –

हिन्दू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीत॥

नामा सोई सेविआ, जहाँ देहुरा न मसीत ॥ [22]

मध्ययुगीन संतों ने अपनी वाणी द्वारा पूरे देश को एक सांस्कृतिक चेतना में बाँध दिया; जिससे जातीयता का विकास हुआ। नामदेव ने अपनी रचनाओं द्वारा, अपने विचारों द्वारा जातीयता का प्रसार किया। उनकी रचना मानवतावाद के भाव से भरी है। उनका अन्तःकरण परदुखकातर था। अज्ञ जनों के लिए उनके हृदय में करुणा थी। ईश्वर से विमुख लोगों के उद्धार के लिए भी वह प्रार्थना करते हैं। वह संसार को सुखी और प्रसन्न देखना चाहते हैं।

नामदेव संत कवियों में लोकप्रिय रहे हैं। उनकी लोकप्रियता का प्रमाण इसी से मिलता है कि परवर्ती संत कवियों ने उनका नाम आदर से लिया है। कबीर ने एक पद में जयदेव और नामदेव का

स्मरण किया है। गुरु की कृपा से इन संतो ने भक्ति के प्रेम की पहचान की –

गुर परसादी जैदेउ नामां॥

भगति कै प्रेमि इन ही है जानां ॥ [23]

संत रविदास ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैण को स्मरण किया है-

नामदेव कबीरू तिलोचनु सधना सैनु तरै॥

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु

हरि जिउ ते सभै सरै॥ [24]

गुरु रामदास जी लिखते हैं कि नामदेव की हरि से ऐसी प्रीति लगी कि जिसे लोग छीपा कहते थे, हरि ने खत्री और ब्राह्मण जातियों को छोड़कर उन्हें स्वीकार कर लिया-

नामदेअ प्रीति लगी हरि सेती लोकु छीपा कहै बुलाई॥

खत्री ब्राह्मण पिठि दे छोड़े हरि, नामदेव लीआ मुखि लाइ॥ [25]

गुरु अर्जुन देव जी ने साधुओं की संगति और हरि के नाम-स्मरण को जीवन का आधार मानते हुए कहा कि जिन्होंने भी इस पथ को अपनाया उन्हें इस संसार से मुक्ति मिल गई-

साध संगि नानक बुधि पाई हरि कीरतन आधारो॥

नामदेउ त्रिलोचन कबीर दासरो मुकति भइउ चमिआरो॥ [26]

महाराष्ट्र के वारकरी संप्रदाय में अपना विशेष स्थान रखने वाले नामदेव ने उत्तरी भारत में भगवत् भक्ति का प्रचार-प्रसार किया। वे निर्गुण मत के प्रथम प्रचारक तथा हिन्दी गीत-शैली के प्रथम गायक कहे जाते हैं। उन्होंने बाह्याचारों एवं मिथ्याडंबरों का खंडन किया। वह पाखंड एवं कपट को छोड़कर, मनोयोग से 'हरि' का नाम लेने का आग्रह करते हैं, जिससे मनुष्य इस संसार से मोक्ष प्राप्त कर सकता है। वह संसार के लोगों को सुखी और प्रसन्न देखना चाहते हैं। लोगों में भक्ति-भावना का प्रचार करना तथा धर्माडंबर, जाति-भेद की संकीर्णता और सामाजिक धार्मिक कुरीतियों का खण्डन करना नामदेव का उद्देश्य रहा है। लोगों में भक्ति-भावना का प्रचार करना, धर्माडंबर, जाति-भेद की संकीर्णता और सामाजिक, धार्मिक आदि कुरीतियों का खंडन करना ही नामदेव का ध्येय था। नामदेव ने अपने सरल भक्तिपूर्ण विचारों से कबीर तथा अन्य परवर्ती संतो का मार्ग प्रशस्त किया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 485

2. सिंघ प्रो० साहिब, भगत बाणी सटीक, तीसरा भाग, सिंघ ब्रदर्स, अमृतसर, संस्करण, चौदहवीं बार, 2013, पृष्ठ 26

3. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 657

4. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 485

5. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 656-657

6. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 485

7. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1164

8. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1163-1164

9. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 727

10. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 988

11. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1164

12. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 873

13. माचवे डॉ० प्रभाकर, संत नामदेव परिचय तथा कविताएँ, हिन्द पॉकेट बुक्स, नवीन संस्करण 2010, पृष्ठ 44

14. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 345

15. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1371

16. मेहरा, डॉ० रमेश, गुरु रविदास दर्शन, प्रथम संस्करण, 2008, पृष्ठ 258

17. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 525

18. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 485

19. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 973

20. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 718

21. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 485

22. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 875

23. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 330

24. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1106

25. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 733

26. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 498